बेंगलुरु की संस्था तैयार करेगी नगरीय विकास का मॉडल

रांची | हिन्दुस्तान ब्यूरो

झारखंड में नगरीय प्रबंधन और विकास का आदर्श मॉडल अब बेंगलुरु के नागरिक तैयार करेंगे। राज्य सरकार ने वहां की संस्था जनाग्रह के साथ इसके लिए करार किया है। यह संस्था झारखंड में नगरीय व्यवस्था का पूरी तरह से अध्ययन कर इसकी समस्याओं का समाधान तलाशेगी। इसके अलावा वैकल्पिक तरीके भी बताएगी।

खास बात यह है कि यह पूरा काम जनाग्रह की ओर से पूरी तरह मुफ्त में किया जाएगा। जनाग्रह बेंगलुरु के संभ्रांत नागरिकों की संस्था है। जो सामाजिक उद्यमिता के मॉडल पर काम करती है। इस संस्था से कई पूर्व नौकरशाह, टेक्नोक्रेट और नगरीय नियोजन के विशेषज्ञ जुड़े हुए हैं। जनाग्रह कर्नाटक के बाहर भी कई राज्यों की सरकारों के साथ मिलकर काम कर रही है। यह संस्था अभी राजस्थान के शहरी विकास प्रबंधन के सुधार पर भी काम कर रही है।

लोगों की राय ली जाएगी

जनाग्रह के विशेषज्ञ विभिन्न समुदाय और पेशों के प्रतिनिधियों से बात कर शहरी विकास के संबंध में उनकी जरूरतों को जानने की कोशिश करेंगे। इसके जरिए शहरी प्रबंधन की प्राथमिकताओं के बारे में राय कायम की जा सकेगी। उसी के मुताबिक राजस्व संग्रह और परियोजनाओं के मॉडल पर विचार किया जा सकेगा।

> हमारे विशेषज्ञ झारखंड में शहरी विकास प्रबंधन की संपूर्ण व्यवस्था का अध्ययन करेंगे। इसके बाद सरकार को सुझाव दिए जाएंगे। यहां कई चीजें पहले से ही अच्छी हैं। उन्हें दूसरे राज्यों में भी अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। -अनिल नायक,
> डिप्टी हेड, एडवोकेसी, जनाग्रह

नगर निकाय आत्मनिर्भर बनेंगेः जनाग्रह के विशेषज्ञ झारखंड के नगर निकायों को आत्मनिर्भर बनाने के मॉडल पर काम करेंगे। अभी प्रदेश के नगर निकाय केंद्र और राज्य प्रायोजित योजनाओं के तहत मिलने वाले अनुदान के भरोसे हैं। संस्था यह सुझाएगी कि कर कैसे लगाए जाएं कि लोगों को देने में दिक्कत नहीं हो। प्रॉफिट और प्रोफेशनल टैक्स जैसे करों की व्यावहारिकता पर भी संस्था के विशेषज्ञ विचार करेंगे।

शहरी विकास के वैकल्पिक आयाम भी सुझाएंगेः जनाग्रह शहरी विकास की प्राथमिकता सूची के निर्धारण में झारखंड सरकार को मदद करेगी।

आमतौर पर देखा जाता है कि शहरों में सड़कों के निर्माण को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि सीवरेज-ड्रेनेज जैसी योजनाएं हाशिए पर होती है। इससे शहर में बेतरतीब विकास को दिशा मिलती है। साथ ही विकास कार्यों पर खर्च हुआ पैसा भी निरर्थक साबित होने लगता है।